I J C R M

International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Review Article

मध्य प्रदेश के प्राचीन बौद्ध शिक्षा केंद्र

डॉ. फ़ातमा खान*
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * डॉ. फ़ातमा खान

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.15013834

सारांश

बौद्ध संस्कृति का प्रभाव मध्य देश में महाजनपद काल से ही रहा है। बौद्ध शिक्षा के चार-धाम में बौद्ध विहारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जो बौद्ध शिक्षा के केंद्र रहे। वर्तमान मध्य देश प्राचीन काल में अवंती देश कहलाता था, जो महात्मा बुद्ध के समय से ही बौद्ध धर्म से प्रभावित रहा। अवंती देश में अनेक बौद्ध मठों तथा विहारों की स्थापना हुई, जो बौद्ध शिक्षा केंद्रों के रूप में विकसित हुए तथा जिनकी ख्याति देश-विदेश में प्रसिद्ध हुई।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 28-01-2025
- **Accepted:** 19-02-2025
- **Published:** 11-03-2025
- **IJCRM:**4(2); 2025: 25-27
- **©2025, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

खान फ़. मध्य प्रदेश के प्राचीन बौद्ध शिक्षा केंद्र. Int J Contemp Res Multidiscip. 2025;4(2):25–27.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: मठ, विहार, अभिक्षु, चैत्य, पारमार्थिक, संघाराम, केंद्र, अहतोक आचार्य, गुफा, बौद्ध शिक्षा

प्रस्तावना

बौद्ध विहार प्राचीन काल में भिक्षुओं तथा भिक्षुणियों के निवास स्थान थे। ये विहार आगे चलकर शिक्षा के महान केंद्रों के रूप में प्रतिष्ठित हुए। अवंती देश (वर्तमान मध्य देश) में अनेक बौद्ध मठ तथा विहार थे, जिनमें बौद्ध धर्म शिक्षा दी जाती थी। प्रारंभ में विहारों की शिक्षा धार्मिक थी तथा बुद्ध के धर्म और विनय संबंधित उपदेशों तक ही सीमित थी, किंतु धीरे-धीरे बौद्ध शिक्षा के विषयों का विस्तार होता गया। बौद्ध शिक्षा में लौकिक तथा पारमार्थिक दोनों शिक्षाओं का समावेश हो गया। पारमार्थिक (आध्यात्मिक) शिक्षा द्वारा निर्वाण की प्राप्ति करना तथा लौकिक शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों का शारीरिक, चारित्रिक एवं नैतिक विकास करना इसका उद्देश्य था। अवंती देश के विभिन्न राजवंशों, उपासकों, व्यापारियों तथा श्रेणियों का विहारों के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान रहा। विहारों का आर्थिक स्रोत मुख्यतः दान ही था, जिसके द्वारा उनके निर्माण एवं संचालन संभव थे। उज्जयिनी, साँची, सतधारा, बाघ, साँवमार, कसरावद, धमनार, खेजड़ीया भोप, कोलवी, पोलाडिंगूर आदि स्थानों पर बौद्ध विहार शिक्षा के केंद्र रहे। साहित्यिक तथा पुरातात्विक स्रोतों द्वारा

© 2025 डॉ. फ़ातमा खान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

बौद्ध शिक्षा के विभिन्न विहारों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। मध्य देश के विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त चैत्य तथा विहारों के अवशेष यह प्रमाणित करते हैं कि ये स्थान बौद्ध शिक्षा के केंद्र रहे। इस शोध-पत्र में मुख्य बौद्ध विहारों का उल्लेख किया जाएगा।

साँची

प्राचीन काल में साँची बौद्ध धर्म का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। इसका प्राचीन नाम 'वेदिसगिरि' अथवा 'चैत्यगिरि' था। मौर्यकाल से ही इस स्थान का विशेष महत्व रहा है। सम्राट अशोक की पत्नी देवी ने यहाँ एक बौद्ध विहार का निर्माण करवाया था, जो बौद्ध शिक्षा का केंद्र था और लंबे समय तक बना रहा। साँची तथा इसके आसपास के क्षेत्रों में अनेक विहार थे, जो शिक्षा के केंद्र थे, जहाँ भिक्षु शिक्षा प्रदान करते थे। यह क्षेत्र सम्राट अशोक के शासनकाल में पूर्ण संरक्षित रहा तथा विख्यात हुआ। यहाँ बड़ी संख्या में बौद्ध विहार थे, जिनमें प्रमुख थे—धम्मदेव विहार, विहार चैत्यगिरि, कोटरा विहार, धम्म विहार, संघ विहार, और रानी विहार आदि। सम्राट अशोक ने साँची में तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में एक स्तूप का भी निर्माण करवाया था, जो आज भी 'स्तूप 1' या 'महास्तूप' के नाम से विश्व प्रसिद्ध है। बौद्ध ग्रंथ *महावंश* तथा *दीपवंश* से ज्ञात होता है कि यहाँ से राजकुमार महेंद्र 40 हजार भिक्षुओं के साथ अनुराधपुर के महोत्सव में भाग लेने लंका देश गया था।

यहाँ के विहारों में अनेक अहतो आचार्य शिक्षा प्रदान करते थे, जिनका उल्लेख यहाँ से प्राप्त अभिलेखों में मिलता है। साँची के स्तूपों और विहारों में भारतीय स्थापत्यकला और बौद्ध संस्कृति का अद्‌भुत समन्वय दिखाई देता है।

धमनार

धमनार वर्तमान में मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले के चंदवासा ग्राम के पास पहाड़ी पर स्थित है। यहाँ पहाड़ी को काटकर बौद्ध चैत्य तथा विहारों का निर्माण किया गया था, जो बौद्ध शिक्षा के केंद्र थे। धमनार की बौद्ध गुफाएँ सर्वप्रथम कनल जेम्स टोड द्वारा 1821 ई. में खोजी गई थीं। बाद में जेम्स फर्ग्युसन, कनिंघम तथा हेनरी कजिन्स ने भी यहाँ कार्य किया। वर्तमान में यहाँ लगभग 80 गुफाएँ हैं, जिनमें चैत्य, स्तूप एवं विहार तीनों ही स्थित हैं।
धमनार का प्राचीन नाम 'धम्म नगर' था। यहाँ से 467-468 ई. का एक अभिलेख प्राप्त हुआ है, जिसमें स्तूप, कूप, उद्यान व लोकोरल विहार के निर्माण का उल्लेख है। यह अभिलेख महाराज भाकर के सेनापति दुर्धर्ष का है, जो संभवतः चंद्रगुप्त द्वितीय के पुत्र गोविंदगुप्त का सेनापति था। इस अभिलेख से धमनार में बौद्ध धर्म और शिक्षा के समृद्ध इतिहास की पुष्टि होती है।

धमनार की बौद्ध गुफाओं में महायान प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इन गुफाओं का निर्माण मुख्यतः 4वीं से 5वीं शताब्दी ई. में हुआ था, जो लगभग 2 किलोमीटर के घेरे में फैली हुई थीं। यह स्थान बौद्ध शिक्षा प्रदान करने का एक बड़ा केंद्र था, जहाँ भिक्षु निवास करते थे एवं बौद्ध धर्म की शिक्षा देते थे। धमनार में बड़ी संख्या में बौद्ध विहारों का प्राप्त होना इस बात का प्रमाण है कि यह स्थान बौद्ध धर्म का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा।

गुप्तकाल में दशपुर (मंदसौर) में बौद्ध धर्म की विशेष उन्नति हुई और औलिकर राजवंश से बौद्ध विहारों को संरक्षण प्राप्त था। नरवर्मा और भाकर बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। धमनार की इन गुफाओं में कुछ गुफाएँ 8वीं और 9वीं शताब्दी ई. की भी हैं। इस प्रकार, धमनार प्राचीन काल में बौद्ध शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र रहा है।

पोला डूंगर

पोला डूंगर वर्तमान में मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले में गरोठ से 20 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में स्थित है। इसका शाब्दिक अर्थ है 'खोखली पहाड़ी'। यहाँ लगभग 100 गुफाएँ उत्कीर्ण हैं, जो लेटराइट पत्थर से निर्मित हैं। इस पहाड़ी पर तीन दिशाओं में गुफाओं का निर्माण किया गया है। इन गुफाओं में दो चैत्य हैं तथा शेष छोटे-छोटे विहार हैं। स्थानीय लोग इस स्थान को 'सूरज पोल' के नाम से जानते हैं। यहाँ के विहार मुख्यतः 8वीं शताब्दी के हैं और हीनयान परंपरा से संबंधित हैं।

पोला डूंगर बौद्ध विहारों का एक समूह है, जिसमें अधिकांश विहार भग्नावशेष के रूप में हैं। इन विहारों में छोटे-बड़े सभी प्रकार के विहार पाए जाते हैं। यह स्थान बौद्ध धर्म से संबंधित था, जहाँ बौद्ध भिक्षु निवास करते थे तथा बौद्ध धर्म की शिक्षा प्राप्त करते थे। इस प्रकार, पोला डूंगर प्राचीन काल में बौद्ध शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है।

बाघ

बाघ वर्तमान में मध्य प्रदेश के धार जिले के अंतर्गत आता है। यहाँ पहाड़ी को काटकर गुफाओं का निर्माण किया गया था। यह स्थान बौद्ध भिक्षुओं द्वारा बौद्ध मठ और विहारों के लिए चुना गया था, जहाँ शांत और एकांत वातावरण में भगवान बुद्ध की दिव्यता का अनुभव किया जा सके। यह क्षेत्र बौद्ध धर्म तथा बौद्ध शिक्षा के प्रचार-प्रसार का केंद्र था, जहाँ बौद्ध भिक्षु निवास करते थे और धर्म का अध्ययन व अभ्यास करते थे। विशेष रूप से बाघ के विहार शिक्षा के केंद्र रहे, जहाँ हजारों भिक्षुगण निवास करते थे और धम्म का प्रचार करते थे।
संभवतः इन गुफाओं का निर्माण काल 5वीं से 6वीं शताब्दी के मध्य रहा होगा। बाघ की गुफाएँ वास्तुशिल्प की दृष्टि से अजंता की गुफाओं के समान हैं, जिनमें बौद्ध धर्म की कथाओं का दृश्यांकन किया गया है। बाघ की गुफाओं से एक अभिलेख भी प्राप्त हुआ है, जिसमें उल्लेख मिलता है कि महिष्मती के राजा सुबंधु ने विहार के रख-रखाव एवं उसमें रहने वाले बौद्ध भिक्षुओं के संरक्षण तथा सहयोग हेतु एक ग्राम 'दात्सलक पल्ली' दान में दिया था। इस अभिलेख में इस विहार को 'कल्याण विहार' कहा गया है। स्थानीय निवासी इसे 'पाठशाला' के नाम से जानते हैं।

इस स्थल पर कुल नौ गुफाएँ हैं, जिनमें गुफा संख्या 1, 4 और 5 अधिक प्रसिद्ध हैं। इन गुफाओं में विविध प्रकार की चित्रकारी की गई है, जो समकालीन जीवन के इतिहास को प्रमाणित करती है। इस प्रकार, बाघ के गुफा-विहार बौद्ध शिक्षा के प्रमुख केंद्र रहे, जहाँ अनेक बौद्ध आचार्य धर्म की शिक्षा देते थे और बौद्ध धम्म का प्रचार करते थे।

संदर्भ ग्रंथ

1. मुखर्जी, आर.के., एंशियंट इंडियन एजुकेशन, पृ. 376
2. एल्तेकर, ए.एस., प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली, पृ. 55
3. उपाध्याय, सीताराम, बौद्ध युगीन भारत, पृ. 131

© 2025 डॉ. फ़ातमा खान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

4. अहेरवार, रामकुमार, मालवा की बौद्ध संस्कृति, पृ. 374
5. शास्त्री, भास्करनाथ, साँची, पृ. 28
6. महावंश, 18.7, पृ. 60
7. उपाध्याय, भरतसिंह, पाली साहित्य का इतिहास, पृ. 77
8. ह्वेनसांग की भारत यात्रा, पृ. 377
9. मध्य प्रदेश में बौद्ध कला, आगरा, 2004, पृ. 119

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

About the Corresponding Author

डॉ. फ़ातमा खान

डॉ. फ़ातमा खान विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन की एक समर्पित इतिहासकार हैं। उन्होंने इतिहास, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व में एम.ए., म्यूज़ियोलॉजी में पीजी डिप्लोमा और पीएच.डी. प्राप्त की है। अब तक उनके 8 शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। पढ़ना, लिखना और यात्रा करना उनकी रुचियाँ हैं।

© 2025 डॉ. फ़ातमा खान. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/